पूर्वानुमान और नियमों का अभाव

विज्ञान की किसी भी शाखा में कुछ पूर्वानुमानों को आधारभूत माना जाता है और उस विशेष विषय के कुछ निश्चित नियम होते हैं। उस विशेष विषय से उद्‌भव होने वाली उन भविष्यवाणियों की सत्यता परखने वाले प्रयोग व्यक्ति-निरपेक्ष होते हैं और उनकी पुनरावृत्ति हो सकती है। प्रयोग करने वाला कोई भी क्यों न हो, कार्यपद्धति के अनुसार यदि वह प्रयोग करे तो उत्तर सदैव यही देगा। विज्ञान के अनुशासन के ये उदाहरण हैं।

फलित ज्योतिष में क्या इस अनुशासन का पालन किया जाता है? उन विषयों के पूर्वानुमान निश्चित रूप से बताए नहीं जाते। बताए भी जाते हैं तो उनमें सभी जगहों पर समानता नहीं होती - नियमों के साथ भी नहीं... फिर भविष्यवाणी निश्चित स्वरूप की और व्यक्ति-निरपेक्ष कैसे होगी? नये वर्ष के आरंभ में समाचारपत्रों में देश के कुछ प्रसिद्ध फलित ज्योतिषियों की "इस वर्ष कौन सी महत्वपूर्ण घटना घटेगी?" के बारे में भविष्यवाणियां छपती हैं। उनकी तुलना करके देखें तब उपरोक्त कथन पर विश्वास होगा।

इस आरोप का उत्तर देते समय फलित ज्योतिष के समर्थकों का 'मौसम का अनुमान' कथन उन्हें और भी इन आक्षेपों के लिए पात्र व उत्तरदायी ठहराता

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से फलित ज्योतिष का मूल्यांकन

● जयंत विष्णु नारलीकर

मराठी से अनु.- दुर्गा घाटगे

यह जानकारी होने पर कि मैं खगोलशास्त्र का अभ्यासक हूं, मुझसे जो अनेकानेक प्रश्न पूछे जाते हैं उनमें निम्नांकित प्रश्नों का समावेश प्रमुखता से होता है :-

१. क्या ग्रहों का मानव जीवन पर प्रभाव पड़ता है?

२. जन्मकुण्डली तैयार कर संबंधित व्यक्ति के संबंध में विस्तृत जानकारी कैसे बता सकते हैं?

३. पूर्णिमा के समय कुछ मानसिक रोगियों पर विशेष प्रभाव पड़ता है, क्या इस कथन में तथ्य है?

४. क्या फलित ज्योतिष विज्ञान है?

इन प्रश्नों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हस्तक्षेप आवश्यक है, क्योंकि ऐसे दृष्टिकोणों को हमारे समाज में प्रभावी ढंग से बिठाने (जमाने) के प्रयास गत अनेक वर्षों से जारी हैं। उन असरकारी प्रयासों से यह पता चलता है कि ज्योतिष की पकड़ समाज में गहराई से है। प्रमुख राजनैतिक व्यापारीवर्ग, सुशिक्षित व डिग्री नहीं पाये हुए लोग भी फलित ज्योतिष पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष विश्वास करते-से दिखलाई पड़ते हैं- फिर अशिक्षितों की तो बात ही क्या?

क्या फलित ज्योतिष विज्ञान पर आधारित है? इस प्रश्न का उत्तर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तड़ाक्- फड़ाक् नहीं दिया जा सकता। जिस प्रकार रोग के बिना भली-भांति परीक्षण के दवा देना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं जमता, उसी प्रकार बिना परीक्षण के फलित ज्योतिष को 'अवैज्ञानिक' घोषित करना भी युक्तिसंगत नहीं लगता। संक्षेप में फलित ज्योतिष का वैज्ञानिक परीक्षण क्या कहता है? अब तक ऐसे अनेक परीक्षण हो चुके हैं। फलित ज्योतिष को विज्ञान की कसौटी पर रखकर भविष्य को परखने की बात देखने में आई है। ऐसे में क्या निष्कर्ष निकले हैं- यह देखा जाए। यानी सिलसिलेवार उपरोक्त लिखित प्रश्नों के उत्तर भी प्राप्त होंगे।

है। तब उसे भी विज्ञान कैसे कहा जा सकता है? इस व्याख्या (आलोचना) के बाबत् भी थोड़ा स्पष्ट किया जाना आवश्यक है।

मौसम कैसा होगा यह निश्चित करने के लिए पृथ्वी के चारों ओर के वायुमंडल की जानकारी चाहिए। हवा, वाष्प, पानी, बर्फ, बादल इत्यादि की वर्तमान स्थिति, उनकी गति में होने वाले परिवर्तन, उनमें स्थानीय भू-भाग की रचना के परिणाम मानव व्यापार के चलते वातावरण पर परिणाम इत्यादि अनेक बातों का समावेश होता है। इनके पीछे का गणित और भौतिकशास्त्र के सिद्धांत यदि ज्ञात हों तो उन्हें छोड़कर मौसम के संबंध में भविष्यवाणी करने हेतु व्यापक गणना की आवश्यकता है। आजकल उपग्रह द्वारा वायुमंडल की जानकारी मिलने लगी है इसलिए मौसम की भविष्यवाणियां ज्यादा और बिना गलती के मिल रही हैं। संक्षेप में फलित ज्योतिष और मौसम विज्ञान इन दोनों को एक ही पंक्ति में रखना उचित नहीं है।

विज्ञान की अनेक शाखाएं आरंभ में अनुभव की स्थिति से गुजरी हैं जब इन शाखाओं के मूल नियम निश्चित नहीं थे और प्रयोग व निरीक्षणों द्वारा प्राप्त होने वाले अनुभवों से उनके शोधों का काम चालू था। ऐसे समय में प्रयोग बार-बार किये जाते थे भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा किये जाते थे और उसमें से ही धीरे-धीरे आकृतिबंध तैयार होता था और उस आकृतिबंध से उसके वास्तविक नियम की खोज की जाती थी। फलित ज्योतिष में ऐसा आकृतिबंध प्राप्त होता है क्या? यह देखने का काम अनेक वैज्ञानिकों ने किया है। उसके कुछ नमूने देखें -

फलित ज्योतिष का परीक्षण

बर्नी सिल्वरमेन, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के इस मनोविज्ञानी ने १९६७ एवं १९६८ के बीच २९७८ लग्नों व ४७८ घटस्फोटों (संबंध विच्छेदों) का फलित ज्योतिष की लीक पर अध्ययन किया। दो फलित ज्योतिषियों द्वारा भी पत्रिका पर से कुछ के मिलान योग (यानी जुड़ने वाले) और कुछ के अयोग (नहीं

जुड़ने वाले) पक्ष तय किये गये। उनके निदान व वस्तुस्थितियों की तुलना को अंकशास्त्र की कसौटी पर रखकर सिल्वरमेन ने यह निष्कर्ष निकाला कि पत्रिका-कुण्डली की कसौटी का वस्तुस्थिति से कोई संबंध नहीं है अर्थात् पत्रिका मिलती है इसलिए लग्न कायम रहे और नहीं मिलने के कारण खत्म हो गये- ऐसा कहने के लिए कोई स्थान नहीं है।

इसी प्रकार सिल्वरमेन ने यह भी देखा कि पत्रिका से मिलने वाली गणनाओं का वास्तविक गणना से कोई संबंध है क्या? समता, बुद्धिमत्ता और सत्यता इत्यादि का आदर अमुक-अमुक प्रकार की पत्रिका वाले करते हैं, ऐसा फलित ज्योतिषज्ञ कहते हैं। सिल्वरमेन ने १६०० मनोविज्ञान के विद्यार्थियों से उनके प्रमुख गुण रुचि-अरुचि क्या है, पूछे। उसी प्रकार उनकी जन्म तारीख वगैरह की जानकारी लेकर उनकी पत्रिका बनाकर फलित ज्योतिषी की कसौटी पर रखकर गुण रुचि-अरुचि तय किये। प्रत्यक्ष और पत्रिका इन दोनों में किसी भी प्रकार की समानता दिखलाई नहीं दी। तब मानव के व्यक्ति मत में और जन्म के समय में किसी भी प्रकार का संबंध नहीं, ऐसा निष्कर्ष सिल्वरमेन ने निकाला।

जॉ-क्लॉड पेकेअर नामक खगोलशास्त्री ने कहा कि पृथ्वी पर ध्रुव प्रदेश के चारों ओर अनेक लोग रहते हैं, जन्म लेते हैं। ऐसे भाग से वर्ष के अनेकों माह कहीं से भी ग्रह दिखलाई नहीं पड़ते। उदाहरण के लिए- रूस के मुर्मास्क जैसे बड़े शहर में वर्ष में छः माह सूर्य दिखलाई नहीं पड़ता, ग्रह दिखलाई नहीं पड़ते और राशि-चक्र के तारे भी दिखलाई नहीं पड़ते, तब ऐसे समय में जनम लिये हुए अभागे जीवों की जन्म-कुण्डली ही तैयार नहीं हो सकती, यह सोचकर उनका जीवन सुचारु रूप से चलता नहीं, ऐसा नहीं है।

वर्ष १९८२ में सभी ग्रहों के एक ओर आ जाने के कारण पृथ्वी पर अनेक उत्पात होंगे, ऐसी भविष्यवाणी फलित ज्योतिषियों ने की थी। वास्तव में ऐसा कुछ घटा नहीं। पृथ्वी पर नैसर्गिक और कृत्रिम (मानव प्रणीत) आपदाएं बारम्बार आती ही रहती हैं, किन्तु उनका ग्रहों से अथवा धूमकेतु से संबंध जोड़ने का यश अब तक किसी को भी प्राप्त नहीं हुआ है। हेली का प्रख्यात धूमकेतु १९८५-८६ में आकर गया, उसका ऐसा कौन-सा दुष्परिणाम निकला।

टेड न्यूमन वैज्ञानिक ने छोटा-सा गणित बिठाकर एक मजेदार निष्कर्ष निकाला है। मान लीजिए सारे ग्रह एक रेखा में एक ही ओर आ गये, उन सबके एकत्रित गुरुत्वाकर्षण के चलते पृथ्वी पर वस्तुएं उन्हीं की ओर खिंचती चली जाएंगी। इस आकर्षण का जोर कितना होगा? यदि वे पृथ्वी के विरुद्ध बाजू में होंगे तो हमारे वजन में जो किंचित कमी होगी, वह कितनी होगी? यदि हम बैठे हुए स्थिति से उठकर खड़े हो जाते हैं तो हमारे वजन में मालूम होते न होते कमी होने के कारण हमारा गुरुत्वाकर्षण का केन्द्र बिन्दु पृथ्वी से थोड़ा लम्बा हो जाता है। सारे ग्रहों के संयुक्त परिणाम इससे भी कम है।

खगोलशास्त्र का विकास होता गया, तब ग्रहों का सूर्य से संबंध जोड़ा गया। पूर्वी यूनानियों ने ग्रहों को 'प्लानेट' यानी 'भटके' कहा था। क्योंकि उनकी आकाशीय कक्षा तारों के सदृश्य नियमित बढ़ती नहीं थी। कभी सूर्य के सामने तो कभी पीछे, ऐसे घूमने वाले ग्रह देखकर ये खगोलपिंड मनमाने भटकते हैं, ऐसा तर्क निकला। उसमें से ऐसा तर्क आया कि ग्रहों में मनमाने भटकने की शक्ति है और आगे उसमें से ऐसा निष्कर्ष निकला ये शक्तिशाली ग्रह मानव पर अपना प्रभाव डालते हैं। इसे यदि फलित ज्योतिष की शुरुआत कहें तो खगोलशास्त्रियों द्वारा ग्रहों की कक्षाओं के गणित बिठाने पर उसका अंत होना चाहिए था। ग्रह मनमाने भटकते न रहकर सूर्य के गुरुत्वाकर्षण के नीचे घूमते रहते हैं, उनकी कक्षाओं को न्यूटन के गणित ने तय किया, ऐसा होने पर भी फलित ज्योतिष पर विश्वास बना ही हुआ है। उल्टे टेड न्यूमन के उपरोक्त उदाहरण में दर्शाए अनुसार फलित ज्योतिष में ग्रहों का प्रभाव दिखाते समय गुरुत्वाकर्षण का आधार लेते बनता नहीं, यह बात जनसाधारण को अब तक मालूम नहीं है। ग्रह हमसे इतनी दूर है कि उनका पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण का जोर एकदम ही नगण्य है। ऐसा होने पर भी फलित ज्योतिष को लोकप्रियता क्यों मिलती है? उसके पीछे वैज्ञानिक दृष्टि होगी, ऐसा लोगों को क्यों लगता है?

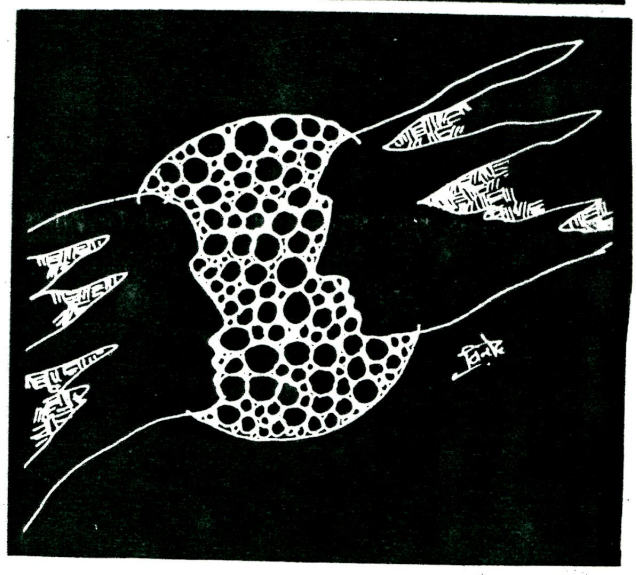

बार्नम इफेक्ट

वर्ष १९७४ में १९२ वैज्ञानिकों (जिसमें अनेक नोबल पुरस्कार प्राप्त सम्मानित व्यक्ति भी थे) का सम्मिलित रूप से बयान प्रकाशित हुआ जिसमें फलित ज्योतिष पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आलोचना थी। अंत में उसमें ऐसा कहा गया था कि लोग फलित ज्योतिष की ओर दौड़ते हैं क्योंकि उन्हें ऐसा लगता है कि उसमें ही अपने नियमित जीवन की समस्याओं के समाधान उन्हें मिलेंगे। उन पर आए हुए संकट दूरस्थ ग्रहों के कारण है, उन पर मानव प्रयत्न नहीं चल सकते, केवल उन ग्रहों को संतुष्ट करने पर ही संकट दूर होंगे, इत्यादि आश्वासनों के कारण स्वाभाविक रूप से उनकी व्यथा दूर होती है ... आश्वासन मिलता है। इसके अतिरिक्त ग्रह ही हमारे विरुद्ध है, ऐसा ज्ञात होने पर स्वतः को मेहनत करने की आवश्यकता शेष नहीं रहती। ऐसे विविध कारणों के चलते फलित ज्योतिष का आश्रय लेने का मोह छोड़ नहीं पाते। फलित ज्योतिष के समर्थक कहते हैं कि लोग हमारा सहारा लेते हैं क्योंकि फलित ज्योतिष का भविष्य समाप्त नहीं होता। यदि वह चूक गया होता तो अब तक लोगों ने फलित ज्योतिष को कब का त्याग दिया होता। इस संदर्भ में बर्नाम इफेक्ट का उल्लेख आवश्यक जान पड़ता है।

'बार्नम एण्ड बेली' सर्कस का मालिक पी.टी. बार्नम कहता था कि उसके सर्कस में विविध प्रकार के खेल होते थे। इस कारण कहीं न कहीं कोई खेल प्रत्येक की पसंद का होता था इसीलिए उसका सर्कस लोकप्रिय था। फलित ज्योतिष का निर्णय भी ऐसा ही होता है। उसका विवरण अनिश्चित और व्यापक होता है इसलिए वह हर एक के गले उतर जाता है। बार्नम का ढंग उपयोग में लाते हुए तैयार किया गया चरित्र चित्रण कैसा होता है, उसका नमूना देखिए-

"आपको ऐसा बहुत लगता है कि लोगों में आप प्रिय हों, लोग आपकी प्रशंसा करें, आपके गुणों की कद्र करें। आप स्वयं अपना कठिन परीक्षण करें, आपका उत्कर्ष होगा - आप में कार्य को पूर्ण करने की पूरी क्षमता है किन्तु आप में सारे गुण होने के बाद भी वे निष्फल होंगे। आप कुछ मामलों में कमजोर होंगे लेकिन उनके लिए आपके पास टोटके हैं। बाहर से आप अनुशासित और स्वयं पर नियंत्रण रख लेने पर भी आंतरिक रूप से आपको कभी कभी चिंताएं डराती हैं और असुरक्षा जान पड़ती है। कभी-कभी आपको शंका होती है कि क्या आपने योग्य निर्णय लिया है। बीच-बीच में आपको आबोहवा बदलनी होती है, जीवन के लिए विविधता की दरकार होती है। बंधे-बंधाए जीवन से कभी-कभी आपको ऊब होती है। आपको यह अभिमान है कि आप स्वतंत्र रूप से विचार करते हैं और दूसरों के कथन को परखे बिना मानते नहीं। आप पूर्ण रूपेण किसी के भी समक्ष खुलते नहीं हैं। कभी-कभी आप खुशी से बहिर्मुख, मिलनसार होते हैं तो कभी अन्यमनस्क और अंतर्मुखी। आपकी कोई आकांक्षा निराधार होगी लेकिन कुल मिलाकर आपको जीवन सुरक्षित चाहिए।

पत्रिका देखकर ऐसा निदान यदि किया जाय तो किसी के लिए भी यह स्वीकार और लाभ देने वाला है क्योंकि साफ-साफ उसमें विशेष कुछ भी कहा नहीं गया है। इस पर यदि थोड़ा विचार करें तो ध्यान में बात आती है कि हम इस तरह के चित्रण को 'बार्नम व्यक्ति-चित्र' कहेंगे। यदि फलित ज्योतिष में सही-सही बिना किसी चूक के भविष्यवाणी करने का यंत्र होगा तो किसी व्यक्ति की पत्रिका देखकर चित्रित किया गया व्यक्ति-चित्र 'बार्नम व्यक्ति-चित्र' की अपेक्षा अधिक दोषरहित उस व्यक्ति पर लागू होना चाहिए। वास्तव में क्या ऐसा घटता है?

इस संदर्भ में हाल ही में किया गया एक परीक्षण शिक्षाप्रद साबित होता है। कॉलेज में अध्ययनरत ५२ अमरीकी विद्यार्थियों को (इनमें ३५ लड़कियां सम्मिलित थीं) इस परीक्षण के लिए बुलाया गया। उनके जन्म के संबंध में जानकारी (तारीख, समय स्थान आदि) और फलित ज्योतिष के संबंध में वे क्या महसूस करते है, इसे सर्वप्रथम दर्ज किया गया। फिर कुछ दिनों बाद उनमें से प्रत्येक को तीन व्यक्ति-चित्र दिये गये। उनमें से एक बार्नम व्यक्ति-चित्र दूसरा उनकी कुंडली से फलित ज्योतिष द्वारा दिया गया व्यक्ति-चित्र और तीसरा 'दोषयुक्त' यानी 'तैयार व्यक्ति-चित्र' था। तीनों व्यक्ति-चित्रों को कहां से तैयार किया गया है, इसे प्रगट न करते हुए उनसे यह पूछा गया कि सबसे सही कौन सा है। इसे ५ निर्धारित नंबरों में से ही निश्चित करना है। यदि फलित ज्योतिषियों की भविष्यवाणी दोषरहित होगी तब उन व्यक्तियों की जन्मकुंडली से तैयार की गई उपरोक्त पत्रिका को सर्वाधिक अंक लेकर 'पास' होना चाहिए।

बार्नम का व्यक्ति-चित्र पांच में से पूरे ३.६१ अंक लेकर सर्वप्रथम आया। बाकी के समकक्ष और दोषयुक्त व्यक्ति-चित्र को पांच में से ३.०८ व ३.०६ अंक मिले। मजेदार बात यह कि जिन (७) लोगों ने अपनी व्यक्तिगत जानकारी में फलित ज्योतिष पर बड़ा विश्वास दिखाया था, उन्होंने बार्नम को ५ में ४.१४ अंक (सरासर) और बाकी के दो व्यक्ति-चित्रों को एक समान ३.२१ अंक दिये थे। यानी बार्नम सदृश्य गोल-गोल वर्णन करने वाले लोगों की बात लोगों के गले जल्दी उतरती है, यह पता चलता है। उसी प्रकार फलित ज्योतिष में कुण्डली पर से चित्रित चित्र अचूक होते है, यह बात भी इस प्रयोग से स्पष्ट हुई।

चंदमा का मानसिक रोगियों पर परिणाम

चंदमा के गुरुत्वाकर्षण के कारण ज्वार-भाटा आता है, वैसे ही मानव रक्त-प्रवाह पर भी इसका असर पड़ता है। इस कारण पूर्णिमा अमावस्या के समय मानसिक रोगों में बढ़ोतरी होती है- यह बात भी इन वैज्ञानिकों ने खोज निकाली है। उदाहरणार्थ एक ढंग इस प्रकार का होता है। पूर्णिमा व अमावस्या के समय पागलपन के दौरे पड़ने पर कुछ मानसिक रोगी हत्या करते है। लीवर और शेरिन ने फ्लोरिडा के डेड काउंटी में पन्द्रह वर्षों की अवधि में हुई १८८७ हत्याओं की जानकारियां एकत्र की और उसमें से यह निष्कर्ष निकाला कि पूर्णिमा और अमावस्या के समय अधिक हत्याएं होती है। किन्तु आगे उनके ध्यान में ऐसा भी आया कि ओहायो में कुएतहोगा काउंटी में २००८ हत्याओं में से सर्वाधिक हत्याएं पूर्णिमा व अमावस्या के समय में न होकर उसके तीन दिनों बाद हुईं। ऐसा होने का कारण उन्होंने अक्षांश में होने वाले परिवर्तन को बताया जो विश्वास योग्य नहीं है। उल्टे पोकॉनी और जॅचिमजिक ने टेक्सास के हेरिस काउंटी में १४ वर्षों में हुई २४९४ हत्याओं के समय की जांच की तब उन्हें चंदमा की कलाओं से कुछ संबंध दिखाई नहीं दिया।

फिलहाल मनोवैज्ञानिकों ने चंदमा की कलाओं का मानसिक अवस्था पर होने वाले परिणाम को अनेकों प्रकार से परीक्षण करके देखा है किन्तु उत्तर नकारात्मक ही आया। मानसिक रोगों के अस्पतालों में आये केस भिन्न-भिन्न प्रकारों के होते है- पागलपन के दौरे, आत्महत्या अथवा वैसा प्रयत्न, एपीलेप्सी आदि प्रकारों का चंदमा से कोई संबंध सिद्ध नहीं हुआ। भिन्न-भिन्न समयों में ऐसे केस अस्पतालों में आते है जिनमें कुछ पूर्णिमा अमावस्या के देखने में आते हैं। मात्र उन दिनों में आये केस पर से चंदमा का मानसिक रोगियों से संबंध जोडना वैज्ञानिक दृष्टि से जमता नहीं है।

फलित ज्योतिष पर विश्वास रखने के अनुचित लाभ

फलित ज्योतिष के विज्ञान न होने पर भी उस पर विश्वास रखकर चलने में क्या बुराई है? उसने किसी का क्या बिगाड़ा है? ऐसा भी एक मत प्रचलित है। इस मत का प्रचलन भी व्यक्ति और समाज के हितों की दृष्टि से घातक है। इसके कुछ उदाहरण -

कुछ आवश्यक व जल्दी निपटाने वाली बातें, कुछ शुभ मुहूर्त के लिए लम्बे समय के लिए टाल दी जाती है। अन्य व्यवहारिक दृष्टि से अनुरूप होते हुए (और कभी-कभी परस्पर प्रेमी होते हुए) जोड़ों की शादियां, पत्रिका नहीं मिलने के कारण टूट जाती है। ग्रहों को शांत करने के लिए, स्वीकार न होने पर भी किये जाने वाले खर्च और व्रत-संकल्प। सूर्यग्रहण के दिन "यह खेल प्रतिच्छाया का" यह मालूम होने पर भी जनमानस को लगने वाला भय, जिसके कारण बम्बई जैसा 'आधुनिक' शहर भी सुनसान पड़ सकता है।

विज्ञान के विशाल उड़ान से हमारी सूर्यमाला के घटक ग्रह और उनके उपग्रह ही क्या, दूर-दूर के तारों का और उससे दूर की आकाशगंगा की जानकारी भी अब मिल रही है। बीसवीं शताब्दी में मानव ने चंदमा पर पांव रखे- इक्कीसवीं शताब्दी में वह मंगल को पदाक्रांत करेगा- पांच-छः शताब्दियों पूर्व के मानव का ग्रहों के सही आकलन नहीं होने पर फलित ज्योतिष पर विश्वास करने की बात समझ में आती है, किन्तु आज के युग में अधिकाधिक जानकारियां उपलब्ध होने पर भी- अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा असफल हुई कल्पना पर विश्वास रखकर समय का, शक्ति का और धन निष्कारण अपव्यय करना कहां तक सही है?

इंटरयूनिवर्सिटी सेंटर
फॉर एस्ट्रोनॉमी एण्ड एस्ट्रोफिजिक्स
पूना यूनिवर्सिटी कैम्पस
गणेशखिन्द पुणे ४११००७